Aman Kumar
"450093192001"

स्वंतत्रता सेनानि -: [बाल गंगाधर तिलक]

हम सबको पता है कि हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ था और इस आजादी पर हम सब भारतवासी को बहुत गर्व है। हर साल की तरह इस साल भी 15 अगस्त को झंडा फेहरायेंगे और दो-चार देशभक्ति गीत गाकर घर आ जायेगें। हमारी आजादी उन भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की वजह से है, जिन्होंने हमारे देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इन महान हस्तियों को हम बदले में कुछ नहीं दे सकते हैं, लेकिन कम से कम हम उन्हें इस आजादी के दिन याद तो कर सकते हैं, उनके बारे में जान तो सकते हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे वीरों के नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखे हैं, जिन्होंने अपने अकेले के दम पर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई शुरु की, उनमें से एक वीर योद्धा थे - **बाल गंगाधर तिलक।**

बाल गंगाधर तिलक को लोकमान्य तिलक के नाम से भी जाना जाता है। लोकमान्य का अर्थ है लोगो द्वारा स्वीकृत किया गया नेता। लोकमान्य के अलावा इनको हिन्दू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है। इनका जन्म 23 जुलाई 1856 में हुआ था। वो एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक स्वतंत्रता सेनानी थे। बाल गंगाधर तिलक को ब्रिटिश राज के दौरान ~~स्वास्वा~~ स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक माना जाता था। उस दौरान उन्होंने मराठी भाषा में नारा दिया था - "स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध हक्क आहे आणि तो मी मिळवणारच"। इसका हिन्दी अर्थ है - स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।

इनका जन्म महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरी जिले के ग. चिखली में हुआ था। रत्नागिरी गाँव से निकलकर आधुनिक कालेज में शिक्षा पाने वाले थे भारतीय पीढ़ी के पहले पढ़े-लिखे नेता था। इन्होंने दक्कन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे। शिक्षा का स्तर सुधारने की दिशा में भी काफी काम किया।

बाल गंगाधर तिलक ने इंग्लिश में मराठा दर्पण व मराठी में केसरी नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरू किए, थे दोनों जल्द ही जनता में बहुत लोकप्रिय हो गए। तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। वो अपने अखबार केसरी में अंग्रेजों के खिलाफ काफी आक्रामक लेख लिखते थे जिसके वजह से उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा था।

चूंकि उन दिनों कांग्रेस का राज था, इस वजह से वो भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए लेकिन जल्द ही वे कांग्रेस के नरमपंथी रवैये के विरुद्ध हो गए और उनके विरोध में बोलने लगे। 1908 में तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे फिर कांग्रेस में शामिल हो गए और 1916 में एनी बेसेंट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की।

वे अपने समय के सबसे प्रख्यात आमूल परिवर्तनवादियों में से एक थे। इसके अलावा वो जल्दी शादी करने

के भी विरोधी थे। इसी वजह से वो शुरू से ही 1891 एज ऑफ़ कंसेन्ट विधेयक के खिलाफ थे, क्योंकि वे उस हिन्दू धर्म में अतिक्रमण और एक खतरनाक उदाहरण के रूप में देख रहे थे। इस अधीनियम ने लड़कियों के विवाह करने की न्यूनतम आयु को 10 से बढ़ाकर 12 वर्ष कर दिया था।

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 6 साल के कारावास की सजा सुनाई। कारावास के दौरान तिलक ने जेल प्रबंधन से कुछ किताबों और लिखने की माँग की लेकिन ब्रिटिश सरकार ~~उन्हें~~ ने उनकी बात न मानी। तिलक ने फिर कैसे भी कर के एक किताब लिखी, कारावास की सजा पूर्ण होने के कुछ समय पूर्व ही बाल गंगाधर की पत्नी का स्वर्गवास हो गया। इस बात की जानकारी उन्हें जेल में ही एक खत के द्वारा हुई। ब्रिटिश सरकार की नुगलकी नीतियों की वजह से वो अपनी मृतक पत्नी के अंतिम दर्शन भी नहीं कर पाए थे।

~~निर्णायक~~ नए ~~दिशा~~ सुधारों को निर्णायक दिशा देने से पहले ही 1 अगस्त 1920 ई. को मुंबई में उनकी मृत्यु हो गयी थी। उनकी मौत पर श्रद्धांजली देते हुए महात्मा गाँधी जी ने उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहा, जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भारतीय क्रान्ति का जनक कहा था।

उन्होंने जेल में रहने के दौरान कई पुस्तकें लिखी मगर श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या को लेकर मांडले जेल में लिखी गयी गीता-रहस्य सर्वोत्कृष्ट है, ये किताब इतनी प्रसिद्ध हुई कि इसका कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

Aman Kumar